हरिशंकर परसाई की कहानियों में व्यंग्य का अध्ययन

Dr. Pushpa Antil, Associate Professor, Government College For Girls, Sector-14, Gurugram (Haryana)
Email-pushpaantil27@gmail.com

सारांश : लेखन में सबसे खास बात परसाई जी की यह थी कि वह खुद को भी व्यंग्य का एक विषय मानते थे। एक जगह वह अपनी बिना टिकट यात्राओं के बारे में लिखते हैं, "एक विद्या मुझे और आ गई थी- बिना टिकट सफर करना। जबलपुर से इटारसी, टिमरनी, खंडवा, इंदौर, देवास बार-बार चक्कर लगाने पड़ते थे और पैसे थे नहीं। मैं बिना टिकट गाड़ी में बैठ जाता था। तरकीबें बचने की बहुत आ गई थीं। पकड़ा जाता तो अच्छी अंग्रेजी में अपनी मुसीबत का बखान करता। अंग्रेजी के माध्यम से मुसीबत बाबुओं को प्रभावित कर देती और वे कहते-'लेट्स हेल्प द पुअर बॉय'।" इसी विष्य पर एक जगह परसाई जी (Harishankar Parsai) लिखते हैं, "गैर जिम्मेदारी इतनी कि बहन की शादी करने जा रहा हूं। रेल में जेब कट गई, मगर अगले स्टेशन पर पूरी-साग खाकर मजे में बैठा हूं कि चिंता नहीं। कुछ हो ही जाएगा और हो गया।" उनके व्यंग्य के अलावा, उनकी कहानियां भी सामाज के स्याह पक्ष पर चोट करती हैं। उनकी कहानियों में भी आपको व्यंग्य मिल जाएंगे। उनकी कहानी 'भोलाराम का जीव' हिन्दी की बेहतरीन व्यंग्य कहानियों में गिनी जाती है। हिन्दी के मशहूर आलोचक नामवर सिंह ने एक बार कहा था कि परसाई ने क्रमश: कहानियों की दुनिया को छोड़ते हुए निबंधों की दुनिया में प्रवेश किया, जहां घटनाएं सिर्फ उदाहरण के लिए प्रयोग की जाती हैं। इस विषय पर खुद परसाई जी ने कहा, "कहानी लिखते हुए मुझे यह कठिनाई बराबर आती है कि जो मैं कहना चाहता हूं, वह मेरे इन पात्रों में से कोई नहीं कह सकता, तो क्या करूं? क्या कहानी के बीच में निबंध का एक टुकड़ा डाल दूं? पर इससे कथा प्रवाह रुकेगा ।

शब्द संकेत : हरिशंकर परसाई, ,कहानियों, व्यंग्य

परिचय: जब 'हिन्दी साहित्य' और 'व्यंग्य', यह दो शब्द पास-पास आ जाते हैं, तो एक व्यक्ति का नाम अपने आप याद आने है और वह नाम है हरिशंकर परसाई (Harishankar Parsai) का। सुप्रसिद्ध व्यंग्यकार हरिशंकर परसाई किसी परिचय के मोहताज़ नहीं हैं। हिन्दी साहित्य में व्यंग्य विधा के लिए, हर वर्ग के पाठक की चेतना में अगर किसी का नाम पहले-पहल आता है, तो वह परसाई जी ही हैं।

जिस तरह से परसाई जी ने सीधी-सादी भाषा में मानवीय बुराइयां, पुरातनपंथी सोच और धार्मिक पाखंड पर अपने शब्दों से प्रहार किया, उसकी कोई दूसरी मिसाल हिन्दी साहित्य में नहीं मिलती। परसाई ने धर्म, जाति, राजनीति, विवाह, मानवीय गुण-अवगुण सभी को कागज़ पर समेटा और उस पर अपनी कलम की नोंक ऐसी चुभोई कि पढ़ने वाला रस लेने के साथ-साथ बेचैन सा हो जाता है।

हरिशंकर परसाई 22 अगस्त 1924 को मध्य प्रदेश में होशंगाबाद के जमानी में पैदा हुए। उनके कई व्यंग्य, निबंध संग्रह, उपन्यास, संस्मरण प्रकाशित हुए। इन व्यंग्य में पगडंडियों का जमाना, सदाचार का तावीज, वैष्णव की फिसलन, विकलांग श्रद्धा का दौर, प्रेमचंद के फटे जूते, ऐसा भी सोचा जाता है, तुलसीदास चंदन घिसैं चंद नाम हैं। परसाई जी साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' के संस्थापक और संपादक थे।

हरिशंकर परसाई हिंदी की वो मशहूर हस्ती हैं जिन्होंने अपनी लेखनी के दम पर व्यंग्य को एक विधा के तौर पर मान्यता दिलाई। उन्होंने अपने व्यंग लेखन से लोगों को गुदगुदाया और समाज के गंभीर सवालों को भी बहुत सहजता से उठाया। व्यंग्य लेखन से हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने और उनके बहुमूल्य योगदान के लिए उन्हें 1982 में साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

हरिशंकर परसाई के जीवन परिचय की बात करें तो परसाईजी का शुरूआती जीवन पेशानियों में बीता. मैट्रिक नहीं हुए थे कि उनकी मां की मृत्यु हो गई. इसके बाद असाध्य बीमारी से पिता की भी मृत्यु हो गई. गहन आर्थिक अभावों के बीच चार छोटे भाई-बहनों की जिम्मेदारी परसाई पर आ गई.

जीवन के तमाम संघर्षों के बीच, परसाई (Harishankar Parsai) ने नागपुर विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम.ए पूरा किया और पढ़ाने का काम शुरू किया। कुछ साल तक पढ़ाने के बाद, उन्होंने सन् 1947 में विद्यालय की नौकरी छोड़ दी। इसके बाद, उन्हें शाजापुर में एक कॉलेज के प्रिंसिपल बनने का भी प्रस्ताव आया, पर उन्होंने इसे ठुकरा दिया। ये सब छोड़कर परसाई ने जबलपुर में स्वतंत्र लेखन करने का फैसला किया और यहीं से उन्होंने साहित्यिक पत्रिका 'वसुधा' का प्रकाशन और संपादन शुरू किया।

परसाई को याद करते हुए जाने-माने व्यंग्यकार डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने कहा, "हालांकि मुझे उनसे मिलने का मौका कभी नहीं मिला, लेकिन उनकी हर एक रचना, छोटी से छोटी लघु कथा को मैंने पढ़ा है। कॉलेज के दौरान मैंने 'रानी नागफनी की कहानी' उपन्यास पर बने एक नाटक का निर्देशन भी किया था। वहीं, 'इंस्पेक्टर मातादीन चाँद पर' पर आधारित एक नाटक में मैंने इंस्पेक्टर मातादीन का रोल प्ले भी किया था। उनके जैसा व्यंग्यकार बनने के लिए, उनके जैसे भाव की जरूरत होती है। जो हर एक साहित्यकार के पास होना मुमकिन नहीं।"

हरिशंकर परसाई की व्यंग्य रचनाएं मन में केवल गुदगुदी ही पैदा नहीं करतीं, बल्कि हमारे सामने सामाजिक यथार्थ को बेहद सहज तरीके से रख भी देती हैं। 10 अगस्त, 1995 को उन्होंने इस दुनिया को अलविदा कह दिया। उन्होंने अपनी लेखनी के दम पर व्यंग्य को हिन्दी साहित्य में एक विधा के तौर पर मान्यता दिलाने का काम किया।

उन्होंने राजनीति पर कई व्यंग्य किये थें. उन्होंने लिखा -

"जनता जब आर्थिक न्याय की मांग करती है, तब उसे किसी दूसरी चीज में उलझा देना चाहिए, नहीं तो वह खतरनाक हो जाती है. जनता कहती है हमारी मांग है महंगाई बंद हो, मुनाफाखोरी बंद हो, वेतन बढ़े, शोषण बंद हो, तब हम उससे कहते हैं कि नहीं, तुम्हारी बुनियादी मांग गोरक्षा है. बच्चा, आर्थिक क्रांति की तरफ बढ़ती जनता को हम रास्ते में ही गाय के खूंटे से बांध देते हैं. यह आंदोलन जनता को उलझाए रखने के लिए है"

मनोविज्ञानिक दृष्टिकोण से भी परसाई जी ने सार्थक कटाक्ष किये हैं. उनके व्यंग मानव मन की बारीकियों के प्रति उनकी समझ को दर्शाते हैं. उन्होंने लिखा-

[1]"बेचारा आदमी वह होता है जो समझता है कि मेरे कारण कोई छिपकली भी कीड़ा नहीं पकड़ रही है. बेचारा आदमी वह होता है, जो समझता है सब मेरे दुश्मन हैं, पर सही यह है कि कोई उस पर ध्यान ही नहीं देता. बेचारा आदमी वह होता है, जो समझता है कि मैं वैचारिक क्रांति कर रहा हूं, और लोग उससे सिर्फ़ मनोरंजन करते हैं. वह आदमी सचमुच बड़ा दयनीय होता है जो अपने को केंद्र बना कर सोचता है."

[2] "'बेइज्जती में अगर दूसरे को भी शामिल कर लो तो आदी इज्जत बच जाती है."

[3]"सफेदी की आड़ में हम बूढ़े वह सब कर सकते हैं, जिसे करने की तुम जवानों की भी हिम्मत नहीं होती"

[4] "आत्मविश्वास धन का होता है, विद्या का भी और बल का भी, पर सबसे बड़ा आत्मविश्वास नासमझी का होता है ।"

धर्म और आस्था के नाम पर राजनेता हमेशा जनता को मूर्ख बना कर अपना उल्लू सीधा करतें आएं हैं. पारसी जी ने राजनीति की इस धूर्तता पर भी वार किया हैं. वो लिखते हैं कि-

[1]"अर्थशास्त्र जब धर्मशास्त्र के ऊपर चढ़ बैठता है तब गोरक्षा आंदोलन के नेता जूतों कि दुकान खोल लेते हैं."

[2] "किसी अलौकिक परम सत्ता के अस्तित्व और उसमें आस्था मनुष्य के मन में गहरे धँसी होती है। यह सही है। इस परम सत्ता को, मनुष्य अपनी आखिरी अदालत मानता है। इस परम सत्ता में मनुष्य दया और मंगल की अपेक्षा करता है। फिर इस सत्ता के रूप बनते हैं, प्रार्थनाएँ बनती हैं। आराधना-विधि बनती है। पुरोहित वर्ग प्रकट होता है।कर्मकाण्ड बनते हैं। सम्प्रदाय बनते हैं। आपस में शत्रु भाव पैदा होता है, झगड़े होते हैं। दंगे होते हैं।"

[3] "दिशाहीन, बेकार, हताश, नकारवादी, विध्वंसवादी बेकार युवकों की यह भीड़ खतरनाक होती है। इसका उपयोग महत्वाकांक्षी खतरनाक विचारधारा वाले व्यक्ति और समूह कर सकते हैं। यह भीड़ धार्मिक उन्मादियों के पीछे चलने लगती है। यह भीड़ किसी भी ऐसे संगठन के साथ हो सकती है जो उनमें उन्माद और तनाव पैदा कर दे। फिर इस भीड़ से विध्वंसक काम कराए जा सकते हैं। यह भीड़ फासिस्टों का हथियार बन सकती है। हमारे देश में यह भीड़ बढ़ रही है। इसका उपयोग भी हो रहा है। आगे इस भीड़ का उपयोग सारे राष्ट्रीय और मानव मूल्यों के विनाश के लिए, लोकतंत्र के नाश के लिए करवाया जा सकता है।"

हरिशंकर परसाई राजनीति पर व्यंग्यवार करने वाले सजग प्रहरी थे. जहां भी बुराई देखी वहां उन्होंने अपनी कलम चलाई. उन्होंने कभी आलोचना या विरोध की चिंता नहीं की. परसाई जी की बेबाकी उनकी कविता की इन पंक्तियों में स्पष्ट रूप से झलकती है-

"किसी के निर्देश पर चलना नहीं स्वीकार मुझको
नहीं है पद चिह्न का आधार भी दरकार मुझको
ले निराला मार्ग उस पर सींच जल कांटे उगाता
और उनको रौंदता हर कदम मैं आगे बढ़ाता
शूल से है प्यार मुझको, फूल पर कैसे चलूं मैं?"

परसाई जी के व्यंग्य वैयक्तिक एवं राजनीतिक कमजोरियो, विसंगतियों, विषमताओं, विडम्बनाओं, आडम्बरों और छल-फरेबों आदि पर करारी चोट करते हैं। आधुनिक काल में व्यंग्य विधा को नयी ऊँचाइयाँ देकर उसे समृद्ध एवं प्रभवशाली बनाने वाले प्रतिष्ठित व्यंग्य-लेखक के रूप में परसाईजी को सदैव याद किया जायेगा।

परसाई की रचनाएं

हरिशंकर परसाई हिंदी के पहले रचनाकार हैं जिन्होंने व्यंग्य को विधा का दर्जा दिलाया। उनकी प्रमुख रचनाएं; कहानी–संग्रह :हँसते हैं रोते हैं, जैसे उनके दिन फिरे, भोलाराम का जीव; उपन्यास :रानी नागफनी की कहानी, तट की खोज, ज्वाला और जल; संस्मरण :तिरछी रेखाएँ; लेख संग्रह :तब की बात और थी, भूत के पाँव पीछे, बेइमानी की परत, अपनी अपनी बीमारी, प्रेमचन्द के फटे जूते, माटी कहे कुम्हार से, काग भगोड़ा, आवारा भीड़ के खतरे, ऐसा भी सोचा जाता है, वैष्णव की फिसलन, पगडण्डियों का जमाना, शिकायत मुझे भी है, उखड़े खंभे , सदाचार का ताबीज, विकलांग श्रद्धा का दौर, तुलसीदास चंदन घिसैं, हम एक उम्र से वाकिफ हैं, बस की यात्रा; परसाई रचनावली) छह खण्डों में(। विकलांग श्रद्धा का दौर के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किए गए। व्यंग्य के अलावा हरिशंकर परसाई के कहानी संग्रह 'हँसते हैं रोते हैं', 'जैसे उनके दिन फिरे', 'भोलाराम का जीव' उपन्यास 'रानी नागफनी की कहानी', 'तट की खोज', 'ज्वाला और जल' तथा संस्मरण 'तिरछी रेखाएँ' भी प्रकाशित हुए.

हरिशंकर परसाई के व्यंग्य

सार्थक श्रम से बड़ी कोई प्रार्थना नहीं है।
~ राजनीति में शर्म केवल मूर्खों को ही आती है।
~ लड़कों को, ईमानदार बाप निकम्मा लगता है।
~ दूसरों के दुख को मान्यता देना ही सहानुभूति है।
~ व्यभिचार से जाति नहीं जाती है; शादी से जाती है।
~ धर्म अच्छे को डरपोक और बुरे को निडर बनाता है।
~ झूठ बोलने के लिए सबसे सुरक्षित जगह अदालत है।
~ नाक की हिफ़ाज़त सबसे ज़्यादा इसी देश में होती है।
~ अंधभक्त होने के लिए प्रचंड मूर्ख होना अनिवार्य शर्त है।
~ सत्य को भी प्रचार चाहिए, अन्यथा वह मिथ्या मान लिया जाता है।
~ तारीफ़ करके आदमी से कोई भी बेवकूफ़ी करायी जा सकती है।
~ चश्मदीद वह नहीं है, जो देखे; बल्कि वह है, जो कहे कि मैंने देखा।
~ जो पानी छानकर पीते हैं, वो आदमी का खून बिना छाने पी जाते हैं।
~ सोचना एक रोग है, जो इस रोग से मुक्त हैं और स्वस्थ हैं, वे धन्य हैं।
~ हीनता के रोग में किसी के अहित का इंजेक्शन बड़ा कारगर होता है।
~ इस देश के बुद्धिजीवी शेर हैं पर वे सियारों की बारात में बैंड बजाते हैं।
~ गाली वही दे सकता है, जो रोटी खाता है। पैसा खाने वाला सबसे डरता है।
~ दुनिया में भाषा, अभिव्यक्ति के काम आती है। इस देश में दंगे के काम आती है।

~ ग़रीबों के साथ धोखों का अविष्कार करने के मामले में अपना देश बहुत आगे है।
~ जब शर्म की बात गर्व की बात बन जाए, तब समझो कि जनतंत्र बढ़िया चल रहा है।
~ हर आदमी बेईमानी की तलाश में है। और हर आदमी चिल्लाता है, बड़ी बेईमानी है।
~ इस पृथ्वी पर जनता की उपयोगिता कुल इतनी है कि उसके वोट से मंत्रिमंडल बनते हैं।
~ नारी-मुक्ति के इतिहास में यह वाक्य अमर रहेगा कि – 'एक की कमाई से पूरा नहीं पड़ता।'
~ राजनीति में, साहित्य में, कला में, धर्म में, शिक्षा में। अंधे बैठे हैं और आँखवाले उन्हें ढो रहे हैं।
~ एक बार कचहरी चढ़ जाने के बाद सबसे बड़ा काम है, अपने ही वकील से अपनी रक्षा करना।
~ एक देश है। गणतंत्र है। समस्याओं को इस देश में झाड़-फूँक, टोना-टोटका से हल किया जाता है।
~ सरकार का विरोध करना भी सरकार से लाभ लेने और उससे संरक्षण प्राप्त करने की एक तरकीब है।
~ पुरुष रोता नहीं है पर जब वो रोता है, रोम-रोम से रोता है। उसकी व्यथा पत्थर में दरार कर सकती है।
~ सफेदी की आड़ में हम बूढ़े वह सब कर सकते हैं, जिसे करने की तुम जवानों की भी हिम्मत नहीं होती।
~ जब मैं प्राण त्याग करूँगा तब इस बात की आशंका है कि झूठे रोने वाले सच्चे रोने वालों से बाज़ी मार ले जाएंगे।
~ जो गिरनेवाला है, वह नहीं देख सकता कि वह गिर रहा है। दूर से देखनेवाला ही उसके गिरने को देख सकता है।
~ आदमी की पहली आवश्यकता अन्न नहीं, वस्त्र है। आदमी एक दिन भूखा रह सकता है पर नंगा नहीं रह सकता।
~ आत्मविश्वास कई प्रकार का होता है, धन का, बल का, ज्ञान का। लेकिन मूर्खता का आत्मविश्वास सर्वोपरि होता है।
~ निंदकों को दंड देने की जरूरत नहीं, खुद ही दंडित है। आप चैन से सोइए और वह जलन के कारण सो नहीं पाता।
~ सबसे बड़ी मूर्खता है – इस विश्वास से लबालब भरे रहना कि लोग हमें वही मान रहे हैं, जो हम उन्हें मनवाना चाहते हैं।
~ मुझे यह शिकायत है कि जिसने अश्रुगैस में देश को आत्मनिर्भर बना दिया उसे शांति का नोबेल पुरस्कार क्यों नहीं मिला।
~ नशे के मामले में हम बहुत ऊँचे हैं. दो नशे खास हैं- हीनता का नशा और उच्चता का नशा. जो बारी-बारी से चढ़ते रहते हैं।
~ हमारे देश में सबसे आसान काम आदर्शवाद बघारना है और फिर घटिया से घटिया उपयोगितावादी की तरह व्यवहार करना है।
~ दिवस कमजोर का मनाया जाता है, जैसे महिला दिवस, अध्यापक दिवस, मजदूर दिवस। कभी थानेदार दिवस नहीं मनाया जाता।
~ फ़ासिस्ट संगठन की विशेषता होती है कि दिमाग़ सिर्फ़ नेता के पास होता है, बाक़ी सब कार्यकर्ताओं के पास सिर्फ़ शरीर होता है।
~ जिनकी हैसियत है वे एक से भी ज्यादा बाप रखते हैं। एक घर में, एक दफ्तर में, एक-दो बाजार में, एक-एक हर राजनीतिक दल में।
~ धन उधार देकर समाज का शोषण करने वाले धनपति को जिस दिन "महाजन" कहा गया होगा, उस दिन ही मनुष्यता की हार हो गई ।
~ 'जूते खा गए' अजब मुहावरा है। जूते तो मारे जाते हैं। वे खाए कैसे जाते हैं? मगर भारतवासी इतना भुखमरा है कि जूते भी खा जाता है।
~ हम मानसिक रूप से दोगले नहीं तिगले हैं। संस्कारों से सामन्तवादी हैं, जीवन मूल्य अर्द्ध-पूँजीवादी हैं और बातें समाजवाद की करते हैं।

~ इस देश में जो किसी की नौकरी नहीं करता, वह चोर समझा जाता है। गुलामी के सिवा शराफत की कोई पहचान हम जानते ही नहीं हैं।
~ बलात्कार को पाशविक कहा जाता है, पर यह पशु की तौहीन है, पशु बलात्कार नहीं करते। सुअर तक नहीं करता, मगर आदमी करता है।
~ व्यस्त आदमी को अपना काम करने में जितनी अक्ल की ज़रूरत पड़ती है, उससे ज़्यादा अक्ल बेकार आदमी को समय काटने में लगती है।
~ धार्मिक उन्माद पैदा करना, अंधविश्वास फैलाना, लोगों को अज्ञानी और क्रूर बनाना; राजसत्ता, धर्मसत्ता और पुरुष सत्ता का पुराना हथकंडा है|
~ प्रजातंत्र में सबसे बड़ा दोष तो यह है कि उसमें योग्यता को मान्यता नहीं मिलती, लोकप्रियता को मिलती है। हाथ गिने जाते हैं, सर नहीं तौले जाते।
~ बाज़ार बढ़ रहा है , इस सड़क पर किताबों की एक नयी दुकान खुली है और दवाओं की दो। ज्ञान और बीमारी का यही अनुपात है हमारे शहर में।
~ पुस्तक लिखने वाले से बेचने वाला बड़ा होता है। कथा लिखने वाले से कथा वाचक बड़ा होता है। सृष्टि निर्माता से सृष्टि को लूटने वाला बड़ा होता है।
~ चाहे कोई दार्शनिक बने. साधु बने या मौलाना बने. अगर वो लोगों को अंधेरे का डर दिखाता है, तो ज़रूर वो अपनी कंपनी का टॉर्च बेचना चाहता है।
~ हमारे लोकतंत्र की यह ट्रेजेडी और का ॅमेडी है कि कई लोग जिन्हें आजन्म जेलखाने में रहना चाहिए वे ज़िन्दगी भर संसद या विधानसभा में बैठते हैं।
~ इस देश के आदमी की मानसिकता ऐसी कर दी गयी है कि अगर उसका भला भी करो तो, उसे शक होता है कि किसी और का भला किया गया है।
~ विचार जब लुप्त हो जाता है, या विचार प्रकट करने में बाधा होती है, या किसी के विरोध से भय लगने लगता है। तब तर्क का स्थान हुल्लड़ या गुंडागर्दी ले लेती है।
~ जिसकी बात के एक से अधिक अर्थ निकलें, वह संत नहीं होता, लुच्चा आदमी होता है। संत की बात सीधी और स्पष्ट होती है और उसका एक ही अर्थ निकलता है।
~ राजनीतिज्ञों के लिए हम नारे और वोट हैं, बाकी के लिए हम गरीब, भूख, महामारी और बेकारी हैं। मुख्यमंत्रियों के लिए हम सिरदर्द हैं और उनकी पुलिस के लिए हम गोली दागने के निशाने हैं।
~ बच्चा, ये कोई अचरच की बात नहीं है। हमारे यहाँ जिसकी पूजा की जाती है उसकी दुर्दशा कर डालते हैं। यही सच्ची पूजा है। नारी को भी हमने पूज्य माना और उसकी जैसी दुर्दशा की सो तुम जानते ही हो।
~ सबसे निरर्थक आंदोलन भ्रष्टाचार के विरोध का आंदोलन होता है। भ्रष्टाचार विरोधी आंदोलन से कोई नहीं डरता। एक प्रकार का यह मनोरंजन है जो राजनीतिक पार्टी कभी-कभी खेल लेती है, जैसे कबड्डी का मैच।
~ नाम बदलने से कुछ नहीं होता, बीमारी पेट के भीतर है। ऊपर मलहम चुपड़ने से दूर नहीं होती। लेकिन गमले में खेती करवा के खाद्य समस्या हल करने वाले नेताओं का ख्याल रहा है कि नाम से ही सब कुछ होता है।
~ अब करना यह चाहिए। रोज़ विधानसभा के बाहर एक बोर्ड पर 'आज का बाजार भाव' लिखा रहे। साथ ही उन विधायकों की सूची चिपकी रहे जो बिकने को तैयार हैं। इससे ख़रीददार को भी सुविधा होगी और माल को भी।
~ साल-भर सांप दिखे तो उसे भगाते हैं। मारते हैं। मगर नागपंचमी को सांप की तलाश होती है, दूध पिलाने और पूजा करने के लिए। सांप की तरह ही शिक्षक दिवस पर रिटायर्ड शिक्षक की तलाश होती है, सम्मान करने के लिए।
~ अगर दो साइकिल सवार सड़क पर एक-दूसरे से टकराकर गिर पड़ें तो उनके लिए यह लाज़िम हो जाता है कि वे उठकर सबसे पहले लड़ें, फिर धूल झाड़ें। यह पद्धति इतनी मान्यता प्राप्त कर चुकी है कि गिरकर न लड़ने वाला साइकिल सवार बुज़दिल माना जाता है, क्षमाशील संत नहीं।

~ देश की आधी ताकत लड़कियों की शादी करने मे जा रही है। पाव ताकत छिपाने मे जा रही है, शराब पीकर छिपाने में, प्रेम करके छिपाने में, घूस लेकर छिपाने में, बची पाव ताकत से देश का निर्माण हो रहा है, तो जितना हो रहा है, बहुत हो रहा है। आख़िर एक चौथाई ताकत से कितना होगा।

हरिशंकर परसाई के लघु व्यंग्य

भूखा आदमी सड़क किनारे कराह रहा था। एक दयालु आदमी रोटी लेकर उसके पास पहुंचा और उसे दे ही रहा था कि एक दूसरे आदमी ने उसको खींच लिया। वह आदमी बड़ा रंगीन था।

पहले आदमी ने पूछा, ' क्यों भाई, भूखे को भोजन क्यों नहीं देते?'

रंगीन आदमी बोला ? ' ठहरो, तुम इस प्रकार उसका हित नहीं कर सकते। तुम केवल उसके तन की भूख समझ पाते हो, मैं उसकी आत्मा की भूख जानता हूं। देखते नहीं हो, मनुष्य-शरीर में पेट नीचे है और हृदय ऊपर। हृदय की अधिक महत्ता है। '

पहला आदमी बोला, ' लेकिन उसका हृदय पेट पर ही टिका हुआ है। अगर पेट में भोजन नहीं गया तो हृदय की टिक-टिक बंद नहीं ही जाएगी। '

रंगीन आदमी हंसा, फिर बोला, ' देखो, मैं बतलाता हूं कि उसकी भूख कैसे बुझेगी। '

यह कहकर वह उस भूखे के सामने बांसुरी बजाने लगा। दूसरे ने पूछा, ' यह तुम क्या कर रहे हो, इससे क्या होगा?'

रंगीन आदमी बोला, ' मैं उसे संस्कृति का राग सुना रहा हूं। तुम्हारी रोटी से तो एक दिन के लिए ही उसकी भूख भागेगी, संस्कृति' के राग से उसकी जनम-जनम की भूख भागेगी। '

वह फिर बांसुरी बजाने लगा।

और तब वह भूखा उठा और बांसुरी झपटकर पास की नाली में फेंक दी।

चंदे का डर

एक छोटी-सी समिति की बैठक बुलाने की योजना चल रही थी। एक सज्जन थे जो समिति के सदस्य थे, पर काम कुछ करते नहीं गड़बड़ पैदा करते थे और कोरी वाहवाही चाहते । वे लंबा भाषण देते थे।

वे समिति की बैठक में नहीं आवें ऐसा कुछ लोग करना चाहते थे, पर वे तो बिना बुलाए पहुंचने वाले थे। फिर यहां तो उनको निमंत्रण भेजा ही जाता, क्योंकि वे सदस्य थे।

एक व्यक्ति बोला, ' एक तरकीब है। सांप मरे न लाठी टूटे। समिति की बैठक की सूचना ' नीचे यह लिख दिया जाए कि बैठक में बाढ़-पीड़ितों के लिए धन-संग्रह भी किया जाएगा। वे इतने उच्चकोटि के कंजूस हैं कि जहां चंदे वगैरह की आशंका होती है, वे नहीं पहुंचते। '

वात्सल्य

एक मोटर से 7-8 साल का एक बच्चा टकरा गया। सिर में चोट आ गई। वह रोने लगा।

आसपास के लोग सिमट आए। सब क्रोधित। मां-बाप भी आ गए। ' पकड़ लो ड्राइवर को। ' भागने न पाए। ' पुकार लगने लगी। लोग मारने पर उतारू। भागता है तो पिटता है। लोगों की आंखों में खून आ गया है।

उसे कुछ सूझा। वह बढ़ा और लहू में सने बच्चे को उठाकर छाती से चिपका लिया। उसे थपथपाकर बोला - ' बेटा !बेटा!'

इधर लोगों का क्रोध गायब हो गया था

मां-बाप कहने लगे .' कितना भला आदमी है।? और होता तो भाग जाता। "

अपना-पराया

आप किस स्कूल में शिक्षक है, '

मैं लोकहितकारी विद्यालय में हूं। क्यों कुछ काम है क्या? "

हाँ ' मेरे लड़के को स्कूल में भरती करना है।"

' तो हमारे स्कूल में ही भरती करा दीचिए। '

' पढाई-वढाई कैसी है?

'नंबर वन। बहुत अच्छे शिक्षक हैं .बहुत अच्छा वातावरण है .बहुत अच्छा स्कूल है।'

'तो आपका बच्चा भी वहीं पढ़ता होगा।'
'जी, नहीं, मेरा बच्चा तो आदर्श विद्यालय में पढ़ता है'
नयी धारा
उस दिन एक कहानीकार मिले। कहने ' लगे, ' बिल्कुल नयी कहानी लिखी है, बिल्कुल नयी शैली, नया विचार, नयी धारा। ' हमने कहा ' क्या शीर्षक है? "
वे बोले, ' चांद सितारे अजगर सांप बिच्छू झील। '
दानी
बाढ़ पीड़ितों के लिए चंदा हो रहा था।
कुछ जनसेवकों ने एक संगीत समारोह का आयोजन किया, जिसमें धन एकत्र करने की योजना बनाई। वे पहुंचे एक बडे सेठ साहब के पास। उनसे कहा, ' देश पर इस समय संकट आया है। लाखों भाई बहन बेघर बार हैं उनके लिए अन्न वस्त्र जुटाने के लिए आपको एक बड़ी रकम देनी चाहिए। आप समारोह में आइएगा। वे बोले - ' भगवान की इच्छा में कौन बाधा डाल सकता है। जब हरि की इच्छा ही है तो हम किसी की क्या सहायता कर सकते हैं?
फिर भैया रोज दो चार तरह का चंदा तो हम देते हैं और व्यापार में दम नहीं है।'
एक जनसेवी ने कहा, 'समारोह में खाद्यमंत्री भी आने वाले हैं ओर वे स्वयं धन एकत्र करेंगे।"
सेठजी के चेहरे पर- चमक आयी' जैसे भक्त के मुख पर भगवान का स्मरण होने पर आती है। । वे 'बोले हां, बेचारे तकलीफ में हैं। क्या किया जाए ' हमसे तो जहां तक हो सकता है, मदद करते ही हैं। आखिर हम भी ' देशवासी हैं। आप आए हो तो खाली थोड़े जाने दूंगा। एक हजार दे दूंगा। मंत्रीजी ही लेंगे न? वे ही अपील करेंगे न? उनके ही हाथ में देना होगा न' '
वे बोले, ' जी हां, मंत्रीजी ही रकम लेंगे।
सेठजी बोले, ' बस-बस, तो ठीक है। मैं ठीक वक्त पर आ जाऊंगा। '
समारोह में सेठजी एक हजार रुपए लेकर पहुंचे, पर संयोगवश मंत्रीजी जरा पहले उठकर जरूरी काम से चले गए। वे अपील नहीं कर पाए, चंदा नहीं ले पाए।
संयोजकों ने अपील की। पैसा आने लगा।
सेठजी के पास पहुंचे।
सेठजी बोले .' हमीं को बुद्धू बनाते हो!
तुमने तो कहा था ? मंत्री खुद लेंगे और वे तो चल दिए। '
सुधार एक जनहित की संस्था में कुछ सदस्यों ने आवाज उठायी, 'संस्था का काम असंतोषजनक चल रहा है। इसमें बहुत सुधार होना चाहिए।
संस्था बरबाद हो रही है। इसे डूबने से बचाना चाहिए। इसको या तो सुधारना चाहिए या भंग कर देना चाहिए। '
संस्था के अध्यक्ष ने पूछा कि किन-किन सदस्यों को असंतोष है।
10 सदस्यों ने असंतोष व्यक्त किया।
अध्यक्ष ने कहा 'हमें सब लोगों का सहयोग चाहिए। सबको संतोष हो, इसी तरह हम काम करना चाहते हैं। आप 10 सज्जन क्या सुधार चाहते हैं, कृपा कर बतलावें। '
और उन दस सदस्यों ने आपस में विचार कर जो सुधार सुझाए, वे ये थे

सन्दर्भ :-

1. हरिशंकर परसाई: ऐसा भी सोचा जाता हैं, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1994
2. हरिशंकर परसाई: दो नाक वाले लोग, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1983
3. हरिशंकर परसाई: शिकायत मुझे भी हैं, राजकमल प्रकाशन नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 1973
4. कमला प्रशाद : आंखन देखी, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण 2000
5. अमिताभ और वेद प्रकाश : विविध के कई रूप, ग्रन्थ अकादमी, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण 1997